जिसने गुरुमंत्र सिद्ध कर लिया उसने गुरुत्व को अपने भीतर स्थापित कर लिया

गुरु मंत्र को सर्वाधिक तेजस्वी मंत्र माना गया है । जो शिष्य हैं उनके लिए तो जीवन का आधार ही गुरु मंत्र है । गुरु मंत्र का पुरश्चरण सवा लाख मंत्र का होता है । वर्ष में कम से कम तीन बार संकल्प लेकर गुरु मंत्र का पुरश्चरण अवश्य ही सम्पन्न करें । सद्गुरु तो शिष्य के सहस्रार स्थित ब्रह्म रन्ध्र में विराजमान होकर शिष्य का सदैव कल्याण ही करते है । ऐसे महान मंत्र की महिमा विलक्षण है । एक गहन विवेचन गुरु मंत्र के सम्बन्ध में

गुरु मंत्र सभी देवताओं के मंत्रों का मूल आत्म होता है। गुरु मंत्र का निरन्तर जप करते रहने से अन्य देवताओं के मंत्रो के जप करने की आवश्यकता ही नहीं होती है। सही अर्थो में गुरु मंत्र में मूल रुप से सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का तेज समाहित होता है, गुरु मंत्र अपने आप में छोटा होते हुए भी असीम क्षमताओं से ओत–प्रोत होता है, क्योंकि

इसके एक–एक शब्द का अर्थ अपने आप में मूल्यवान है, जो कार्य किसी अन्य देवी देवता के लम्बे चौडे श्लोक एवं स्तुति गान से नहीं हो पाता है, उसे गुरुमंत्र तत्काल कर दिखाता है, यदि पूर्ण श्रद्धा एवं विश्वास के साथ जप किया जाये तो व्यक्ति को अन्य कुछ करने की आवश्यकता ही नहीं होती है, प्रत्येक साधक के लिए गुरु मंत्र जप आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है, जो साधक जिस कामना से, जिस भाव से मंत्र जप करता है, उसके अनुसार ही उसे फल सिद्धि प्राप्त होती है। गुरु मंत्र जप के प्रभाव से साधक को निश्चित ही अपने पुरुषार्थ की सिद्धि प्राप्त होती है।

गुरुमंत्र के जप से उत्पन्न शक्ति साधक के शरीर को सूर्य के समान तेजस्वी बना देती है। गुरु मंत्र में शिष्य की पूर्णता निहित है। गुरु मंत्र साधक के शरीर रुपी बैटरी को पुनः चार्ज करने में पूर्ण समर्थ है, जिस प्रकार निष्क्रिय बैटरी की प्लेटों को पुनः साफ करके उसमें नया एसीड डालकर बैटरी को पुनः चार्जयुक्त बनाया जाता है, उसी प्रकार साधक के अन्दर अन्तः निहित सप्त शरीरों में स्थित अन्तः चक्र जो जन्म जन्मान्तर की वासना, कुसंस्कारो, मलिनता से सुप्त हो गये है। इन चक्रों को गुरु मंत्र चैतन्य करके पुनः सक्रिय कर देता है।

साधक के शरीर में स्थित अन्तः चक्रो के चैतन्य होने के बाद साधक साधनाओं के माध्यम से इन अन्तः चक्रों में छिपी शक्ति को जाग्रत कर देवत्व, ऋषित्व को प्राप्त कर लेता है। यदि गुरु मंत्र को साधक निरन्तर जपता रहता है तो गुरुमंत्र के बीजों मे छिपी शक्तिया साधक के शरीर में जाग्रत हो जाती है।

हमारा गुरु मंत्र "ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः" है। जिसका बाह्य अर्थ है कि 'हे नारायण ! आप सभी तत्वों के मूल तत्व है और सभी आकार और निर्विकार शक्तियों से परे है। हम आपको गुरु रुप में श्रद्धापूर्वक नमन करते है।'
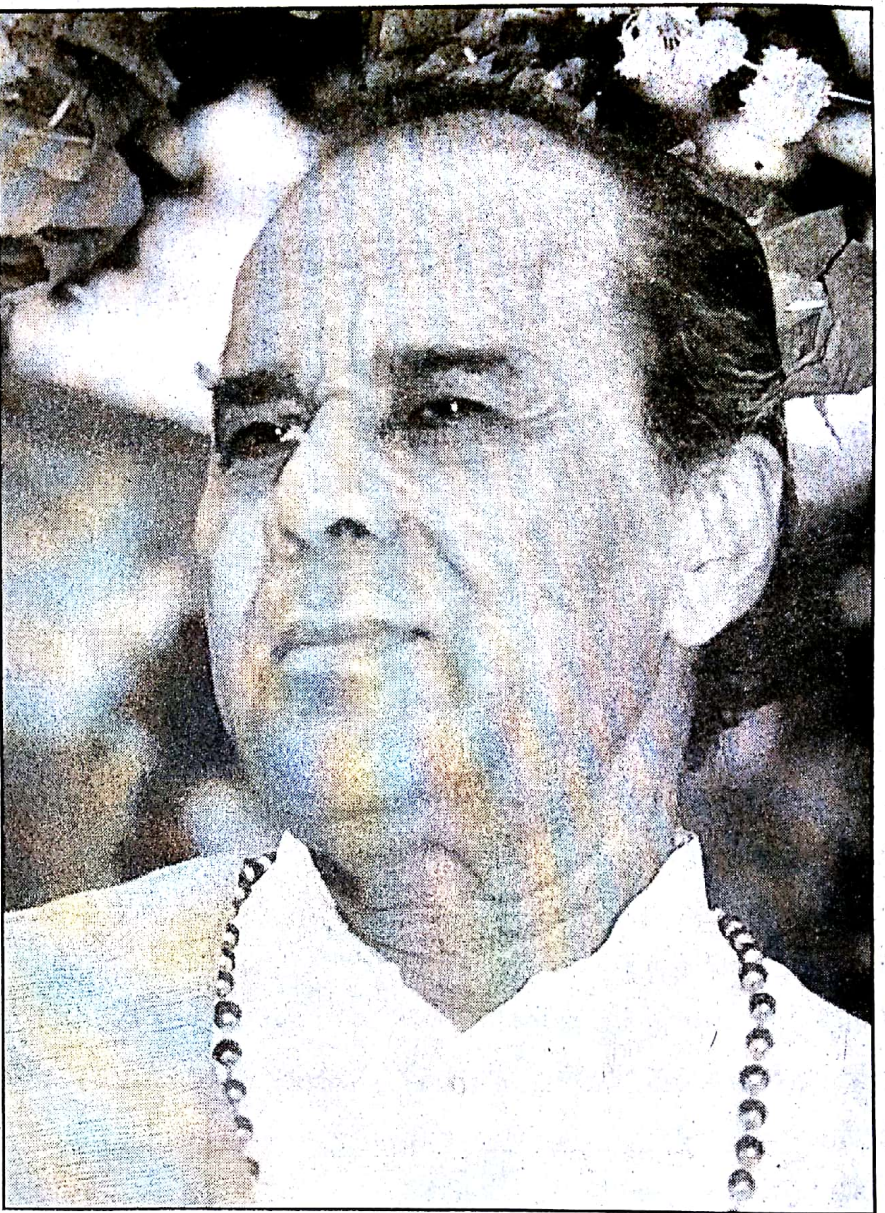
यह सोलह बीजाक्षरों से युक्त बीज मंत्र उन षोडश कलाओं को दर्शाता है, जिसमें गुरुदेव का स्वरुप परिपूर्ण है। ये बीज मंत्र ब्रह्माण्ड की सर्वश्रेष्ठ सिद्धियों के प्रतीक है। गुरु मंत्र के प्रत्येक बीजाक्षरों को गुरु मंत्र से संप्रक्त करके जप किया जाय, तो इस प्रकार के जप से साधक को अवर्चनीय सफलता प्राप्त होती है।

(१) गुरुमंत्र में पहला बीज 'प' है, इसका अर्थ है 'पराकाष्ठा' अर्थात् जीवन के हर क्षेत्र में, हर आयाम में सर्वश्रेष्ठ सफलता, ऐसी सफलता जो किसी के पास न हो।

इस बीज मंत्र के प्रभाव से वह इन पांचो पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है ओर वह अपनी इच्छानुसार कितने ही दिनों तक की समाधि ले सकता है। इस बीज को साध लेने से व्यक्ति लोकानुलोक गमन की सिद्धि प्राप्त कर लेता है और पलक झपकते ही वह ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में जाकर वापिस आ सकता है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से उसे दूसरी उपलब्धि यह होती है कि वह वरदान या श्राप दे सकता है।

इस बीज मंत्र के जपने मात्र से एक सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी जीवन की उच्च सफलताओं को प्राप्त कर सकता है, वह चाहे भौतिक हो या आध्यात्मिक। ऐसे व्यक्ति को स्वतः ही अटूट धन सम्पदा, ऐश्वर्य, मान–सन्मान प्राप्त हो जाता है। इस बीज मंत्र को जपने वाला व्यक्ति भीड़ में भी 'नायक' रहता है, वह मानव जाति का, मार्ग दर्शक कहलाता है और आने वाली पीढिया उसे युग पुरुष से सम्बोधित करती है।

(२) गुरुमंत्र में दूसरा बीज 'र' है। यह शरीर में स्थित अग्नि को दर्शाता है, जिसका कार्य व्यक्ति को रोग, दुष्प्रभावों, आदि से बचाना है। इसके अलावा यह इच्छित व्यक्तियों को 'रति सुख' (काम) प्रदान करता है, जो मानव जीवन की एक आवश्यकता है।

यह सूक्ष्म अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो शरीर की अग्नि से भिन्न दूसरे प्रकार की अग्नि है, इसका कार्य व्यक्ति के चित्त में स्थित सारी कमियों और विकारों 'काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार' को जलाकर पवित्र करना है। विकारों के नष्ट होने से मानव चेतना का मस्तिष्क ब्रह्माण्ड के ज्ञान को समझने में सामर्थ्यवान हो जाता है। इस बीज मंत्र के जप के प्रभाव से व्यक्ति इच्छित अवधि तक जीवित रह सकता है, जिसे शास्त्रों में इच्छा मृत्यु शब्द से विभूषित किया है।

(३) गुरु मंत्र में तीसरा बीज 'म' है जोकि 'माधुर्य' को इंगित करता है। माधुर्य का तात्पर्य है, शरीर के अन्दर छिपा हुआ सत् चित् आनन्द, आत्मिक शान्ति। इस बीज को साध लेने से व्यक्ति के जीवन में वह चाहे पारिवारिक हो या सामाजिक, दोनों में एक पूर्ण सामजस्य प्राप्त हो जाता है, उसके जीवन में सभी प्रकार की बाधायें एवं परेशानियां समाप्त हो जाती है। जिसके फलस्वरुप उसे अवर्णित आनन्द की प्राप्ति होती है, उसे पारिवारिक एवं सामाजिक, यश प्राप्त होता है तथा वह व्यक्ति एक दृढ एवं पवित्र चरित्र का स्वामी बन जाता है।

(४) गुरु मंत्र में चौथा बीज 'त' है जो 'तत्वमसि' का प्रतिनिधित्व है, जिसका अर्थ है वह दिव्य स्थिति जो कि उच्चत्तम योगी भी प्राप्त करने के लिए लालायित रहते है। तत्वमसि का अर्थ है कि मैं तत्व हूं, या मैं ही वह हूं। जब साधक इस बीज मंत्र का जप करता है तो वह ब्रह्म में तथा अपने में लेश मात्र भी अन्तर नहीं समझता। उसकी अध्यात्म की उच्चत्तम स्थिति हो जाती है, उसको जो उपलब्धियां और सिद्धियां प्राप्त होती है, उसको शब्दों ढालना असम्भव हैं, उसको तो केवल ऐसी स्थिति प्राप्त करने पर ही समझा जा सकता है। सही अर्थो में इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति को असीमित शक्तियां प्राप्त हो जाती है।

(५) गुरुमंत्र में पांचवा बीज 'वा' है। यह बीज मानव शरीर में पांच प्रकार की प्राण तत्व 'प्राण, अपान, व्यान, समान और उदान' को दर्शाता है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से वह इन पांचो पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त कर लेता है ओर वह अपनी इच्छानुसार कितने ही दिनों तक की समाधि ले सकता है। इस बीज को साध लेने से व्यक्ति लोकानुलोक गमन की सिद्धि प्राप्त कर लेता है और पलक झपकते ही वह ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में जाकर वापिस आ सकता है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से उसे दूसरी उपलब्धि यह होती है कि वह वरदान या श्राप दे सकता है।

(६) गुरुमंत्र में छठा बीज 'य' है जोकि 'यम' को दर्शाता

है अर्थात जीवन को एक सही पवित्र एवं लय के साथ जीने का तरीका । इसके द्वारा व्यक्ति को एक अद्वितीय, आकर्षण प्राप्त हो जाता है, उसका व्यक्तित्व इस प्रकार का हो जाता है कि लोग उसकी ओर स्वतः ही आकर्षित होकर उसकी हरेक बात को मानने के लिए तैयार हो जाते है। इस बीज मंत्र को साध लेने से व्यक्ति मृत्युंजय हो जाता है, मृत्यु कभी उसको स्पर्श नहीं कर सकती।

(७) गुरुमंत्र में सातवा बीज 'ना' है। इसका अर्थ है 'नाद' अर्थात दिव्य संगीत जो एक आनन्दमय, शक्तिप्रद गुंज्जरण है, जो व्यक्ति नित्य गुरु मंत्र का जप करता है, उसके आत्म में यह दिव्य संगीत गुज्जरित होता रहता है। इस बीज मंत्र को साध लेने से व्यक्ति संगीत में पारन्गत हो जाता है, उसकी आवाज अपने आप में सुरीली, मुधरतायुक्त, आकर्षणयुक्त होती है। जो भी कोई उसको सुनता है वह एँक अद्वितीय आनन्द से सरोबार हो जाता है और एक असीम शान्ति का अनुभव करता है।

(८) गुरुमंत्र में आठवां बीज 'रा' अर्थात् 'रास' है, जिसका अर्थ है, एक दिव्य उत्सव। एक अनिवर्चनीय मस्ती, इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति अपने जीन में उस तत्व को उतार पाने में सफलता प्राप्त कर लेता है, जिससे उसका सम्पूर्ण जीवन परिवर्तित होकर सम्पन्नता से युक्त हो जाता है। इस बीज मंत्र के अनवरत जप से व्यक्ति सहज ही भाव समाधि में पहुच जाता है। आर व्यक्ति गुरु में लीन होकर अपनी कुण्डलिनी को पूर्णतः जाग्रत कर परकायां प्रवेश, जलगमन, अटूट लक्ष्मी एवं असीमित शक्ति का स्वामी बन जाता है।

(९) गुरु मंत्र में नवां बीज 'य' है, इसका तात्पर्य 'यथार्थ' से है, अर्थात् वास्तविकता, सच्चाई, परमसत्य। इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति माया जाल को काटने में सफल हो जाता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते है, और वह दिव्य बोध को उपलब्ध होकर जाग्रत अवस्था प्राप्त कर लेता है तथा वह समाज में कीचड़ में जिस प्रकार कमल रहता है, उसी प्रकार वह व्यक्ति रहता है।

(१०) गुरुमंत्र में दसवा बीज मंत्र 'ण' है जोकि 'अणु' को दर्शाता है। इसका तात्पर्य है ब्रह्म की शक्ति। इस बीज मंत्र को जपने से व्यक्ति ब्रह्म स्वरुप हो जाता है, वह संसार में प्रत्येक के अन्दर अपने ही आत्म का दर्शन करता है, तथा वह स्वतः उन गोपनीय अष्ट सिद्धियों का स्वामी बन जाता है, जो ग्रन्थो में वर्णित है जैसे कि 'अणिमा, महिमा, गरिमा, लधिमा.....'

(११) गुरुमंत्र मे ग्यारहवा बीज 'य' हे, अर्थात् 'यज्ञ' जिसका तात्पर्य है, यज्ञ विज्ञान इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति के शुभ और अशुभ समस्त कर्मो की ज्ञान की अग्नि में जलकर समाप्ति हो जाती है, जिससे वह कर्मो के कठोर बन्धन से मुक्त होकर जन्म मृत्यु के आवागमन के चक्र

लोक पर आ जा सकता है।

(१३) गुरुमंत्र मे तेरहवा बीज 'रु' है, अर्थात् 'रुद्र' जिसका अर्थ है ब्रह्माण्ड का मुख्य पुरुषतत्व है। इस बीज को सिद्ध करने से व्यक्ति कभी भी वृद्ध नही होता एवं वह न ही काल कवलित होता है, वह सर्वव्यापी, सर्वज्ञाता, एवं सर्वशक्तिशाली हो जाता है। ऐसा व्यक्ति विश्वामित्र की भांति नवीन सृष्टि रच सकता है, और शिव की तरह उसे नष्ट भी कर सकता है, सम्पूर्ण प्रकृति उसके इशारे पर नृत्य करती हुई प्रतीत होती है, उसके चारो और एक दिव्य चतुर्दिक आभा मण्डल बन जाता है, और जो भी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क में अन्य व्यक्ति आता है, उसका आध्यात्मिक उत्थान हो जाता है।

(१४) गुरुमंत्र में चौदहवा बीज 'यो' जिसका अर्थ है 'योनि' अर्थात्

मुक्त हो जाता है, इस बीज मंत्र के प्रभाव से उसे प्राचीन विद्याओं का ज्ञान हो जाता है, धन एवं वैभव की लक्ष्मी उसकी गृह में निरन्तर स्थापित रहती है।

(१२) गुरुमंत्र में बारहवा बीज 'गु' अर्थात् गुंजरण है। यह व्यक्ति के आन्तरिक शरीरों जैसे के भू, भुवः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्यम् 'से उसके चित्त के योग को दर्शाता है। 'गु' गुरु का बीज मंत्र है, उसको जपने से व्यक्ति स्वतः ही गुरुमय हो जाता है, गुरु का सारा ज्ञान शक्तियां, तेजस्विता उसके शरीर में उतर जाती है, जिससे वह अत्यन्त उच्च भव्य स्थिति को प्राप्त कर लेता है, ऐसा व्यक्ति देवता, ऋषियों, एवं विश्व में पूजनीय हो जाता है। और वह योगीराज की उपाधि से विभूषित हो जाता है, ऐसा व्यक्ति किसी भी

शिवकी शिवा (शक्ति) ब्रह्माण्ड का मुख्य स्त्री तत्व, ऋणात्मक शक्ति। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड इसी ऋणात्मक शक्ति के स्वरुप गतिशील है, जो भी साधक इस बीज को सिद्ध कर लेता है, उसके शरीर में शक्ति चक्र जाग्रत होकर शक्ति उतर जाती है। इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति अपनी समस्त पाप राशि को नष्ट करने में सफल हो जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने व्यक्तित्व को छिपाने के लिए दूसरे पर माया का आवरण डालने में समर्थ हो जाता है।

(१५) गुरुमंत्र में पन्द्रहवां बीज 'न' है, अर्थात् 'नवीनता' जिसका अर्थ है, एक नयापन, एक नूतनता, एक अद्वितीय क्षमता। इस बीज मंत्र के प्रभाव से व्यक्ति दूसरों को अपनी इच्छानुसार अनुकूल बना सकता है, एवं स्वयं

यह सूक्ष्म अग्नि का भी प्रतिनिधित्व करता है, जो शरीर की अग्नि से भिन्न दूसरे प्रकार की अग्नि है, इसका कार्य व्यक्ति के चित्त में स्थित सारी कमियों और विकारों 'काम, क्रोध, लोभ, मोह और अंहकार' को जलाकर पवित्र करना है। विकारों के नष्ट होने से मानव चेतना का मस्तिष्क ब्रह्माण्ड के ज्ञान को समझने में सामर्थ्यवान हो जाता है। इस बीज मंत्र के जप के प्रभाव से व्यक्ति इच्छित अवधि तक जीवित रह सकता है, जिसे शास्त्रों में इच्छा मृत्यु शब्द से विभूषित किया है।

ही दूसरो के अनुकूल बनने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है। जिसके फलस्वरुप वह शीर्षथ स्थान पर पहुंच जाता है, और उसे किसी भी प्रकार की कमी नही होती। इस बीज मंत्र के सिद्ध कर लेने से व्यक्ति अपने बाह्य व्यक्तित्व कद, रंग, आंखों को बदलने में सक्षम हो जाता है। ऐसा व्यक्ति हर बार नवीन स्वरुप में दिखाई देता है। सही अर्थो में इस बीज मंत्र को सिद्ध करने वाला व्यक्ति हर क्षण इच्छानुसार परिवर्तित होता रहता है।

(१६) गुरुमंत्र का सोलहवां बीज 'म' है, अर्थात् 'मातृत्व', जिसका अर्थ है असीमित ममता अर्थात् व्यक्ति को उत्थान की ओर अग्रसर करने की शक्ति। इस बीज मंत्र को साध लेने से व्यक्ति स्वयं एक दया और मातृत्व का सागर बन जाता है, वह दया ओर ममता से आपूरित होकर किसी के दुःख और परेशानियों को अपने ऊपर लेकर उनको सुख पहुंचाने की चेष्टा करता है।

यह तो गुरुमंत्र की एक प्रारम्भिक व्याख्या है, गुरु मंत्र के एक-एक बीजाक्षर वृहदग्रंथ लिखा जा सकता है। गुरु मंत्र के प्रत्येक बीजाक्षर के महत्व को समझते हुए गुरुमंत्र का जप करने वाला शिष्य जीवन में ही दिव्यता प्राप्त कर लेता है।

संसार में भौतिकता और आध्यात्मिकता दोनों का ही संगम है, हमारे जीवन में भौतिक तत्व भी है जो इस संसार में प्राप्त भोग विलास को पूर्ण रूप से अपनाने को प्रेरित करते है, विषय वासना बार-बार हावी होती लेकिन गुरु मंत्र का प्रभाव निराला ही है, गुरु सम्बन्ध में कहा गया है

अज्ञान तिमारान्धस्य ज्ञानाजंन शलाकया।
येन चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः॥

जो हमारे जीवन के अंधकार को अपने ज्ञान से दूरकर हमें ज्ञान दृष्टि प्रदान करे, उन सदगुरुदेव को नमन है।

गुरु हर शिष्य पर हर स्थिति में नजर रखते ही हैं और बार-बार उसे अज्ञान रूपी भटकन से बचाकर ज्ञान रूपी मार्ग पर लाते है जिससे वह अपना जीवन पूर्ण रूप से जी सकें, भौतिकता की दृष्टि से भी उन्नति कर सके और अपने जीवन आध्यात्मिक लक्ष्य अर्थात अध्य-आत्म अपने सदगुरु से पूर्ण मिलन और परमतत्व को प्राप्त कर सके।

नीचे गुरु मंत्र के बीजाक्षरों से युक्त कुछ विशेष साधनाएं दी जा रही हैं, जिन्हें आप सम्पन्न कर अपने जीवन का पूर्ण लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

बीज मंत्रों से संपृक्त गुरु मंत्र साधनाएं

(१) स्वयं के अभ्युदय के लिए –

जीवन में यदि आप चाहते है कि सफलता आपके कदम चूमे और यदि उन्नति के उच्च शिखर पर पहुंचना हैं, तो गुरु मंत्र से उत्तम और कोई पथदर्शक नहीं है। जो तुम्हें उच्चता प्रदान कर सके, श्रेष्ठता प्रदान कर सके, तुम्हारे जीवन का अभ्युदय कर सके। साधक 'अभ्युदय माला' से निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें–

मंत्र

॥ ॐ वं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. १८०)

(२) विपत्तियों के नाश के लिए

मानव जीवन है, तो दुःख भी होगें, कठिनाइयों भी होंगी और विपत्तियां भी आयेंगी, पर यदि अन्य कहीं भटकने

की अपेक्षा गुरु मंत्र जप पूर्ण निष्ठा के साथ कर लिया जाय तो समस्त विपत्तियों का नाश स्वतः ही होने लगता है। निम्न मंत्र का सवा लाख मंत्र जप 'अपदहन्ता माला से करें–'

मंत्र

॥ ॐ खं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. १९५)

(३) रोगनाश के लिए

गुरु मंत्र से कैसा भी रोग हो, जड़मूल से समाप्त किया जा सकता है, इससे श्रेष्ठ अन्य कोई उपचार नहीं है, जो कि मनुष्य को रोग मुक्त कर पूर्ण स्वास्थय प्रदान कर सके। निम्न मंत्र का 'रुद्र माला' से सवालाख जप करें–

मंत्र

॥ ॐ रं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. १५०)

(४) सौभाग्य प्राप्ति के लिए

यदि बार–बार प्रयत्न करने पर भी भाग्य साथ न दें, तो उस व्यक्ति से दुर्भाग्यशाली दूसरा कोई नही होता, किन्तु यदि व्यक्ति 'सौभाग्य माला' से निम्न मंत्र का सवालाख जप कर ले, तो उससे ज्यादा सौभाग्यशाली ही अन्य कोई नहीं होता, क्योंकि यह दुर्भाग्य की लकीरों को मिटाकर सौभाग्य के अक्षर अंकित कर देने वाला अत्यंत तेजस्वी मंत्र हैं–

मंत्र

॥ ॐ क्लीं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. १७५)

(५) सुलक्षणा पत्नी प्राप्ति के लिए

इस मंत्र के माध्यम से अपनी इच्छानुकूल पत्नि को प्राप्त किया जा सकता हैं, जो सुलक्षणा हो, सौन्दर्यवती हो, साक्षात् लक्ष्मी हो, प्रिया हो, वरना सम्पूर्ण जीवन ही तनाव ग्रस्त हो जाता है, निम्न मंत्र का 'स्निग्धा माला' से सवालाख मंत्र जप करें–

मंत्र

॥ ॐ सुं हुं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. १७५)

(६) दारिद्रय, दुःखादि के नाश के लिए

इस मंत्र के माध्यम से जीवन में व्याप्त दुःख, दैन्यता, दरिद्रता जैसे शत्रुओ का नाश कर जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पन्नता प्राप्त करते हुए जीवन को उल्लासित व प्रफुल्लित बनाया जा सकता है। 'ऐश्वर्यवद्धिनी माला' से निम्न मंत्र का सवालाख जप करें–

मंत्र

॥ ॐ क्रीं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. २१०)

(७) समस्त साधनाओं में सफलता प्राप्ति के लिए

इससे बड़ा और सर्वश्रेष्ठ उपाय नहीं है, जो कि बड़ी–बड़ी उच्चकोटि की साधनाओं में सफलता प्रदान करने मे सक्षम हो, क्योंकि गुरु ही मात्र ऐसे व्यक्ति है, जो शुभ और लाभ के प्रदाता है और समस्त न्यूनताओ को समाप्त करने वाले हैं।

कैसी भी साधना हो या जीवन का कोई भी क्षेत्र हो, सफलता निश्चित प्राप्त होती ही है। निम्न मंत्र का 'साफल्य माला' से सवालाख मंत्र जप करें–

मंत्र

॥ ॐ ह्लीं परम तत्वाय
नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

(साधना सामग्री न्योछावर रु. ३५०)

इन बीजाक्षरों से संप्रक्त गुरु मंत्र के सवालाख जप से निश्चित ही उपरोक्त लाभ साधक को प्राप्त होते हैं, यह एक संन्यासी के द्वारा बताये गये तेजस्वी प्रयोग है, जो अचूक है, पूर्ण लक्ष्य भेदन में समर्थ है। मंत्र जप पूरा होने पर माला नदी, तालाब या मंदिर मे विसर्जित कर दें।